देशबन्धु
Influencing Public Opinion Since 1959
26 Jun 2024 - Page 12

सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है-कुलपति

पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन

बिलासपुर, 25 जून (देशबन्धु)। मनोविज्ञान विभाग, पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय एवं साईकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ के द्वारा मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आज समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में प्रो. बंश गोपाल सिंह कुलपति पंडित सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय शामिल हुए व अध्यक्षता कुलसचिव भुवन सिंह राज ने किया ।

संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में कुल 12 शोध पत्र की प्रस्तुति प्रतिभागियों द्वारा दी गई। सत्र अध्यक्षता प्रो. रश्मि सिंह, काशी विद्यापीठ बनारस एवं सह अध्यक्षता डॉ. देवजानी मुखर्जी, प्राध्यापक मनोविज्ञान सेण्ट थामस महाविद्यालय भिलाई द्वारा की गई। द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में प्रोफेसर दिनेश नागर, डायरेक्टर वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ़ सोशल साइंसेज ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स इंदौर का उद्बोधन हुआ। इसके साथ ही प्रोफेसर राजेंद्र सिंह राजपूत प्राचार्य डिपार्टमेंट ऑफ़ कम्युनिटी मेडिसिन एंड साइकोलॉजी शासकीय एचडीसीएच मेडिकल कॉलेज आजमगढ़, उत्तर प्रदेश एवं प्रोफेसर विवेक महेश्वरी कुलपति लकुलेश योग विश्वविद्यालय, गांधीनगर गुजरात ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रो. मीता झा, प्राध्यापक मनोविज्ञान अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को छत्तीसगढ़ शोध सम्मान व के. सूर्यप्रकाश रेड्डी काउंसलर रायपुर एवं डॉ. निशा गोस्वामी को छत्तीसगढ़ समाधान सम्मान से विभूषित किया गया। इस अवसर पर कुल सचिव भुवन सिंह राज ने अपने वक्तव्य में कहा कि फोरम शोध के साथ-साथ समाधान के लिए भी कार्य कर रहा हैं।

यह फोरम की उपलब्धि है। मरीज व छात्र की मनोविज्ञान को समझना राष्ट्र व समाज के लिए आवश्यक है। कुलपति बंश गोपाल सिंह ने अपने वक्तव्य में कहा कि सामाजिक समस्याओं का निदान अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा। वर्तमान परिदृश्य पर चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की महत्ता काफी बढ़ गई है। सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है। देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में भी अब यह विषय तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस अवसर पर डॉ. पुष्कर दुबे सहायक प्राध्यापक प्रबंधन विभाग को उनके शोध - पत्र द सिनर्जी का श्रीमद् भागवत गीता कर्म और मेंटल पीस एनहांसिंग लीडरशिप इफेक्टिवेनेस इन हायर एजुकेशन पर बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन का पुरूस्कार दिया गया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 90 प्रतियोगियों ने सहभागिता की तथा कुल 04 तकनीकी सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किये जो पूरे भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों जिनमें उ. प्र., म. प्र. उत्तराखंड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, झारखंड, हरियाण एवं दिल्ली मुख्य रूप से है। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ साइकोलॉजिकल फोरम के अध्यक्ष डॉ. बसंत सोनबेर, उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के सहसंयोजक डॉ. मनोज कुमार राव, सचिव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस. रूपेंद्र राव, सह सचिव डीआर गुरप्रीत छाबड़ा, कोषाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. रोली तिवारी, सहसंयोजक डॉ ललिता साहू, डॉ. मंजरी शर्मा एवं फोरम के सदस्य डॉ. अंकित देशमुख, डॉ. मनोज खन्ना समेत विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शिक्षार्थी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

सामाजिक समस्याओं का निदान संस्कृति के हो अनुरूप: डा. सिंह

संगोष्ठी में उपस्थित अतिथि

पंडित सुंदरलाल शर्मा मुक्त विश्वविद्यालय के कुलपति डा.बंश गोपाल सिंह ने कहा कि सामाजिक समस्याओं का निदान अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा। सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है। विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग एवं साइकोलाजिकल फोरम छत्तीसगढ़ द्वारा ''मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध'' विषय पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति डा.बंश गोपाल सिंह ने ये बात कही।

कुलपति डा.सिंह ने आगे कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की महत्ता काफी बढ़ गई है। छत्तीसगढ़ में भी अब यह विषय तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। प्रथम सत्र में 12 शोध पत्र की प्रस्तुति प्रतिभागियों द्वारा दी गई। सत्र अध्यक्षता प्रो. रश्मि सिंह, काशी विद्यापीठ बनारस एवं सह अध्यक्षता डा. देवजानी मुखर्जी, प्राध्यापक मनोविज्ञान सेण्ट थामस महाविद्यालय भिलाई द्वारा की गई। विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में प्रो.दिनेश नागर, डायरेक्टर श्री वैष्णव इंस्टीट्यूट आफ सोशल साइंसेज ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स इंदौर का उद्बोधन हुआ। इसके साथ ही प्रोफेसर राजेंद्र सिंह राजपूत प्राचार्य डिपार्टमेंट आफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड साइकोलाजी शासकीय एचडीसीएच मेडिकल कालेज आजमगढ़, उत्तर प्रदेश एवं प्रोफेसर विवेक महेश्वरी कुलपति लकुलेश योग विश्वविद्यालय, गांधीनगर गुजरात ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। प्रो. मीता झा, प्राध्यापक मनोविज्ञान अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विवि को छत्तीसगढ़ शोध सम्मान व के. सूर्यप्रकाश रेड्डी काउंसलर रायपुर व डा. निशा गोस्वामी को छत्तीसगढ़ समाधान सम्मान से विभूषित किया गया।

90 प्रतियोगी, चार तकनीकी सत्र

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 90 प्रतियोगियों ने सहभागिता की और कुल चार तकनीकी सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए। विभिन्न राज्यों जिनमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, झारखंड, हरियाणा एवं दिल्ली समेत अन्य राज्यों के प्रतिभागियों ने शोध पत्र प्रस्तुत किया है। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शिक्षार्थी विशेष रूप से उपस्थित थे।

सामाजिक समस्याओं का अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा निदान: कुलपति सिंह

'मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध' पर संगोष्ठी

लोकस्वर मीडिया नेटवर्क
lokswar.in

बिलासपुर। मनोविज्ञान विभाग, पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय एवं साईकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ की ओर से आयोजित ''मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध'' विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन हुआ। समापन सत्र में मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. वंश गोपाल सिंह व अध्यक्षता कुलसचिव भुवन सिंह राज ने किया। संगोष्ठी के द्वितीय दिवस प्रथम सत्र में 12 शोध पत्र की प्रस्तुति प्रतिभागियों द्वारा दी गई। सत्र अध्यक्षता प्रो. रश्मि सिंह, काशी विद्यापीठ बनारस एवं सह अध्यक्षता डॉ.रेवजानी मुखर्जी, प्राध्यापक मनोविज्ञान सेण्ट थामस महाविद्यालय भिलाई ने की। द्वितीय सत्र में प्रो. दिनेश नागर, डायरेक्टर वैष्णव इंस्टिट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स इंदौर का उद्बोधन हुआ। इसके साथ ही प्रो. राजेंद्र सिंह राजपूत प्राचार्य डिपार्टमेंट ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड साइकोलॉजी शासकीय एचडीसीएच मेडिकल कॉलेज आजमगढ़, उत्तर प्रदेश व प्रो. विवेक माहेश्वरी कुलपति लकुलेश योग विश्वविद्यालय, गांधीनगर गुजरात ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. पुष्कर दुबे सहायक प्राध्यापक प्रबंधन विभाग को उनके शोध - पत्र ''द सिनर्जी का श्रीमद् भागवत गीता कर्म और मेंटल पीस एनहांसिंग लीडरशिप इफेक्टिवेनेस इन हायर एजुकेशन'' पर बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन का पुरस्कार दिया गया। दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में90 प्रतियोगियों ने सहभागिता की तथा 4 तकनीकी सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किया इनमें उप्र., मप्र, उत्तराखंड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, झारखंड, हरियाणा एवं दिल्ली मुख्य रूप से है। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ साइकोलॉजिकल फोरम के अध्यक्ष डॉ. बसंत सोनबेर, उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के सहसंयोजक डॉ. मनोज कुमार राव, सचिव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस रूपेंद्र राव, सह सचिव डीआर गुरप्रीत छाबड़ा, कोषाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. रोली तिवारी, सहसंयोजक डॉ. ललिता साहू, डॉ. मंजरी शर्मा एवं फोरम के सदस्य डॉ. अंकित देशमुख, डॉ. मनोज खन्ना सहित विश्वविद्यालय के प्राध्यापक एवं शिक्षार्थी उपस्थित रहे।

प्रो. मीता, रेड्डी और निशा का सम्मान

प्रो. मीता झा, प्राध्यापक मनोविज्ञान अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को छत्तीसगढ़ शोध सम्मान वहीं के. सूर्यप्रकाश रेड्डी काउंसलर रायपुर एवं डॉ. निशा गोस्वामी को छत्तीसगढ़ समाधान सम्मान से विभूषित किया गया। कुलसचिव भुवन सिंह ने कहा कि, फोरम शोध के साथ-साथ समाधान के लिए भी कार्य कर रहा है जो उपलब्धि है। मरीज व छात्र की मनोविज्ञान को समझना राष्ट्र व समाज के लिए आवश्यक है। कुलपति सिंह ने कहा कि सामाजिक समस्याओं का निदान अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा। वर्तमान परिदृश्य पर चर्चा करते हुए कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की महत्ता काफी बढ़ गई है। सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है। देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में भी अब यह विषय तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

हरिभूमि
epaper.haribhoomi.com
Bilaspur Bhoomi - 26 Jun 2024 - Page 3

पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय में राष्ट्रीय संगोष्ठी

जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज की आवश्यकता

बिलासपुर। पं सुन्दरलाल शर्मा (मुक्त) विश्वविद्यालय एवं साइकोलॉजिकल फोरम छत्तीसगढ़ द्वारा मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य बोध विषय पर दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी मंगलवार को समापन हुई। समापन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. बंश गोपाल सिंह रहे। संगोष्ठी की अध्यक्षता कुलसचिव भुवन सिंह राज ने की। संगोष्ठी के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में कुल 12 शोध पत्र की प्रस्तुति प्रतिभागियों द्वारा दी गई। कुलपति बंश गोपाल सिंह ने कहा कि सामाजिक समस्याओं का निदान अपनी संस्कृति के अनुरूप करना होगा। वर्तमान परिदृश्य पर उन्होंने कहा कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनोविज्ञान की महत्ता काफी बढ़ गई है। सफल जीवन के लिए मनोविज्ञान का ज्ञान होना आज के दौर की आवश्यकता है। देश के अन्य राज्यों के साथ-साथ छत्तीसगढ़ में भी अब यह विषय तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ साइकोलॉजिकल फोरम के अध्यक्ष डॉ. बसंत सोनबेर, उपाध्यक्ष एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के सहसंयोजक डॉ. मनोज कुमार राव, सचिव एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. एस. रूपेंद्र राव, सह सचिव डीआर गुरप्रीत छाबड़ा, कोषाध्यक्ष एवं आयोजन सचिव डॉ. रोली तिवारी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

मनोविज्ञान को समझना राष्ट्र के लिए जरूरी

इस अवसर पर कुल सचिव भुवन सिंह राज ने कहा कि फोरम शोध के साथ-साथ समाधान के लिए भी कार्य कर रहा है। यह फोरम की उपलब्धि है। मरीज व छात्र की मनोविज्ञान को समझना राष्ट्र व समाज के लिए आवश्यक है। प्रो. मीता झा, प्राध्यापक मनोविज्ञान अध्ययन शाला पंडित रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय को छत्तीसगढ़ शोध सम्मान व के. सूर्यप्रकाश रेड्डी काउंसलर रायपुर एवं डॉ. निशा गोस्वामी को छत्तीसगढ़ समाधान सम्मान से विभूषित किया गया।

90 प्रतियोगियों की रही सहभागिता

डॉ. पुष्कर दुबे सहायक प्राध्यापक प्रबंधन विभाग को उनके शोध द सिनर्जी का श्रीमद् भागवत गीता कर्म और मेंटल पीस एनहांसिंग लीडरशिप इफेक्टिवेनेस इन हायर एजुकेशन पर बेस्ट पेपर प्रेजेंटेशन का पुरस्कार दिया गया। इस दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में कुल 90 प्रतियोगियों ने सहभागिता की और कुल 4 तकनीकी सत्रों में अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए, जो पूरे भारत वर्ष के विभिन्न राज्यों जिनमें उप्र, मप्र, उत्तराखंड, बिहार, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, झारखंड, हरियाण एवं दिल्ली मुख्य रूप से है।

दूसरे सत्र में इन्होंने दिया वक्तव्य

द्वितीय सत्र में विषय विशेषज्ञ वक्ता के रूप में प्रोफेसर दिनेश नागर, डायरेक्टर वैष्णव इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज ह्यूमैनिटीज एंड आर्ट्स इंदौर का उद्बोधन हुआ। इसके साथ ही प्रोफेसर राजेंद्र सिंह राजपूत प्राचार्य डिपार्टमेंट ऑफ कम्युनिटी मेडिसिन एंड साइकोलॉजी शासकीय एचडीसीएच मेडिकल कॉलेज आजमगढ़, उत्तर प्रदेश एवं प्रोफेसर विवेक महेश्वरी कुलपति लकुलेश योग विश्वविद्यालय, गांधीनगर गुजरात ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

National Seminar & 6th Annual Conference
(HYBRID MODE)
of
PSYCHOLOGICAL FORUM CHHATTISGARH
on
Mental Health And Well-being :
Understanding The Imperatives of Contemporary Times
Dated : 24-25 June, 2024
Organized by
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY